प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध सन् 1920 ई. में महात्मा गाँधीजी द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थान गूजरात विद्यापीठ के हिन्दी भाषा-साहित्य विभाग, महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय के अन्तर्गत डॉ. जशवंतभाई डी. पंड्या के निर्देशन में पूर्ण हुआ है । इस संबंध में अपने आप को सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे इस अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान में शोध करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है । यह संस्थान अपने आप में विशिष्ट है क्योंकि इसकी ख्याति आज भी अपने उच्च आदर्शों एवं शैक्षिक संदर्भों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखती है । अतः ऐसे संस्थान में अध्ययन एवं शोध के जो विभिन्न लाभ मिल सकते हैं वे सभी सौभाग्यवश मुझे भी प्राप्त हुए हैं । मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि मुझे इस संस्थान से विद्यावाचस्पति की शोध उपाधि (Ph.D.) प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो रहा है ।

विषय चयन :

मैं साहित्य की सेविका एवं विद्यार्थी होने के नाते आरंभ से ही मैं अध्ययन प्रेमी रही हूँ । अध्ययन के पश्चात् मुझे लगा कि वर्तमान युग में यदि देश और समाज की समस्याओं से साहित्य की कोई विधा प्रत्यक्ष रूप से जुडी हुई है तो वह है 'भक्ति साहित्य'। भक्ति साहित्य के कवि तुलसीदास मेरे प्रिय कवि रहे हैं । तुलसीदास के काव्य में जो रूप सज्जा हुई है, उनके काव्य में सहजता, सरलता और अर्थ की गहनताने मुझे ऐसा प्रभावित किया है कि मेरे वह आदर्श बन चुके है । उनके काव्य का अध्ययन करते-करते उनके काव्य में जो भक्ति भावना प्रतिपादित हुई है, उस रामभक्ति पर अनायास ही कार्य करने की मेरे मन में लालसा हुई और मैंने मेरे परम आदरणीय गुरुवर्य डॉ. जशवंतभाई पंड्या साहब को ''रामचरितमानस' में हास्य व्यंग्य' विषय पर शोधकार्य करने का प्रस्ताव रखा । उन्होंने सहर्ष मुझे इस पर शोधकार्य करने की आज्ञा दी ।

पूर्ववर्ती प्रयासों का आकलन :

'रामचरितमानस' के विविध विषय पर अब तक जो शोधकार्य हुए हैं, वे इस प्रकार है-

1. 'रामचरितमानस' में युगबोध
2. 'रामचरितमानस' में निरूपित यथार्थ और कल्पना
3. तुलसीदासकृत 'कवितावली' एक अवलोकन
4. 'रामचरितमानस' में तुलसी की नारी भावना
5. प्रकृति के परिप्रेक्ष्य में 'रामचरितमानस'
6. आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'रामचरितमानस'
7. 'रामचरितमानस' का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

शोध की सम्भावनाएँ :

तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' द्वारा हिन्दूओं में नवजागरण का कार्य किया था । हिन्दू-मुस्लिमों के भेदभावों को दूर किया तथा संस्कारी, धार्मिक वातावरण का प्रादुर्भाव किया, माता-पिता के प्रति सम्मान, भाईचारा, भगवान से अनुनय-विनय, शत्रु के प्रति व्यवहार तथा उसकी सहायता करना आदि बातों का समावेश हुआ है । आज के समय में तो 'रामचरितमानस'की महिमा उसके मूल्यों की नितान्त आवश्यकता है । आज प्रत्येक देश स्पर्धा, द्वेष और दुश्मनी का माहोल बनाये बैठे हैं । भाई-भाई लड़ रहे हैं । तो इस 'रामचरितमानस' के द्वारा हम उस राग-द्वेष के भाव को खत्म कर सकते हैं । यदि इसकी महिमा का बखान या गान करें तो पूरे संसार में शांति का बीज बोने में हम सफल हो सकेंगे ।

'रामचरितमानस' पर बहुत सारे शोधकार्य हुए हैं । इतने सारे शोधकार्य होने के बावजूद भी अभी कई पक्ष ऐसे हैं, जिस पर शोधकार्य किया जा सकता है, जैसे –

'रामचरितमानस' : एक अनुशीलन
'रामचरितमानस' : राम कैकेयी संवाद
'रामचरितमानस' : एक अध्ययन
'रामचरितमानस' : में हास्य-व्यंग्य

आदि विषयों पर शोधकार्य किया जा सकता है । मैं 'रामचरितमानस' में हास्य-व्यंग्य विषय पर कार्य करना चाहती हूँ । इस विषय पर किसी ने शोधकार्य नहीं किया है और ऐसे शोध से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया जा सकता है, इसलीए इस शोध की अत्यंत आवश्यकता है ।

शोध प्रबंध के अध्यायों का सार :

प्रथम अध्याय में तुलसीदास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन किया गया है । तुलसीदास जी का जन्म किस समय हुआ, जन्मस्थान, शिक्षा-दीक्षा कहाँ हुई, उनके बचपन की व्यथा, किस तरह जीवन यापन किया । गार्हस्थ्य और वैराग्य प्रेरणा, संघर्ष सम्मान, संस्कृतिप्रेम, देशप्रेम, बहुज्ञता, जीवन की संध्या बेला आदि वैसे उनकी अप्रमाणित कृतियाँ 39 हैं, लेकिन सर्वसम्मत विद्वानों के अनुसार तुलसीदास जी की प्रमाणित कृतियाँ 12 हैं । वृद्धावस्था में कष्टमय जीवन तथा मृत्युतिथि संबंधी आदि का उल्लेख किया है ।

द्वितीय अध्याय में मानस के संदर्भ में हास्य-व्यंग्य की अवधारणाएँ प्रस्तुत की गई है । वर्तमान समय में ही नहीं बल्कि प्राचीन समय में भी हास्य-व्यंग्य की कितनी आवश्यकता थी उसे प्रस्तुत किया है । हास्य-व्यंग्य की व्युत्पत्यर्थ, हास्य-व्यंग्य की परिभाषा, गुण, भेद, उद्देश्य, तत्त्व, आवश्यकता, प्रकार, विशेषताएँ, लक्ष्य, महत्व और हास्य-व्यंग्य में क्या अंतर है उसे बखूबी निभाने का प्रयास किया गया है ।

तृतीय अध्याय में संस्कृत तथा मध्यकाल में चयनित कवियों की रचनाओं में हास्य-व्यंग्य पर प्रकाश डाला गया है । संस्कृत साहित्य के द्वारा हास्य-व्यंग्य को प्रस्तुत किया है । जैसे वैदिक साहित्य, वाल्मीकि रामायण में महाभारत सुभाषित तथा पंचतंत्र एवं हितोपदेश में हास्य-व्यंग्य के द्वारा मानव को सत्य के साथ साक्षात्कार कराया है । हिन्दी साहित्य में मध्ययुग के चुने हुए कवियों में सूरदास, जायसी और कबीर जी अपने दोहों के प्रहारों से समाज तथा दुनिया को मानवता का पाठ पढ़ाने में कामयाब हुए हैं । यह लोग उत्तम समाज सुधारक के रूप में आज भी प्रसिद्ध है । इन कवियों की व्यंग्यवाणी के द्वारा समाज की कुरीतियाँ, जातिबंधन, अन्धविश्वास, संकुचित मानसिकता, नारीशोषण, अंधश्रद्धा तथा ऊँच-नीच के भेदभाव को हटाने का क्रांतिकारी प्रयास किया है ।

चतुर्थ अध्याय में तुलसीदास जी के काव्यग्रंथों में हास्य-व्यंग्य योजना पर प्रकाश डाला है । इनमें कवितावली को सात काण्डों में विभाजित किया है । बालकांड – 22 छंद, अयोध्याकांड – 28 छंद, सुन्दरकांड – 32 छंद, अरण्यकांड – 1 छंद, किष्किन्धाकांड – 1 छंद, लंकाकांड – 58 छंद, उत्तरकांड – 183 छंद कुल मिलाकर 325 छंद है । इनमें से कहाँ पर हास्य-व्यंग्य है, उसे उजागर किया गया है ।

पंचम् अध्याय 'तुलसीदास जी के 'रामचरितमानस' में हास्य-व्यंग्य' अंतिम अध्याय है जिसमें विविध प्रसंगों द्वारा हास्य-व्यंग्य प्रकट किया गया है । जैसे बालकांड में शिव-पार्वती विवाह, विश्वमोहिनी एवं नारद प्रसंग, धनुर्भंग तथा लक्ष्मण-परशुराम प्रसंग, अयोध्याकांड में कैकेयी-मंथरा प्रसंग, श्रीराम एवं केवट प्रसंग, अरण्यकांड में शूर्पणखा प्रसंग, किष्किन्धाकांड में बालि-सुग्रीव प्रसंग, सुन्दरकांड में अशोक वाटिका में सीता-रावण प्रसंग, रावण राजसभा में हनुमान-रावण प्रसंग, लंकाकांड में अंगद-रावण प्रसंग, उत्तरकाण्ड में भुशुण्डि शाप प्रसंग इस प्रकार विविध प्रसंगो द्वारा जीवन में आत्मसात् करनेवाला एक श्रेष्ठ ग्रंथ है । दुर्बलताओं पर विजय, मूल्यों के प्रति निष्ठा और दायित्वपूर्ण जीवन के विविध आयामों को हास्य-व्यंग्य के द्वारा किस प्रकार सूक्ष्मभाव और विचारों के ताने-बाने के माध्यम से उभारा है, उनका विश्लेषण एवं अनुशीलन किया है ।

पंचम् अध्याय के पश्चात् उपसंहार है, जिसमें समग्र शोध निबंध के प्रमुख निष्कर्षों को तथा मुद्दों को प्रस्तुत किया है । शोधनिबंध के अंत में संदर्भसूचि प्रस्तुत की गई है । यह पीएच.डी. हिन्दी शोधनिबंध – संशोधन पद्धतियों के आधार पर अथाग प्रयत्न, परिश्रम द्वारा मेरे आदरणीय शोधप्रबंध मार्गदर्शक डॉ. जशवंतभाई पंड्या साहब के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है । शोधनिबंध को तैयार करने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में सहायता करनेवाले सभी स्नेहजनों की मैं आभारी हूँ ।